पाठ का सारांश

टोपी शुक्ला एवं इफ़्फ़न का परिचय–टोपी शुक्ला इस कहानी का मुख्य पात्र है। वह हिंदू ब्राह्मण है तथा उसका वास्तविक नाम बलभद्र नारायण शुक्ला है। इफ़्फ़न टोपी शुक्ला का दोस्त है। वह मुसलमान है और उसका वास्तविक नाम सय्यद ज़रगाम मुरतुज़ा है। टोपी उसे इफ़्फ़न के बजाय इफ्फन नाम से पुकारता है। यद्यपि उसे यह नाम अच्छा नहीं लगता था, लेकिन फिर भी इसी नाम से बोलता रहा। वह नाम को लेकर लड़ने वालों में से नहीं था। चौथी कक्षा में पढ़ते हुए दोनों की दोस्ती हो गई थी।

इफ़्फ़न के परिवार का परिचय–इफ़्फ़न के दादा और परदादा प्रसिद्ध मौलवी थे। वे कट्टर परंपरावादी थे। हिंदुस्तान को काफ़िरों का देश मानते थे। यहीं पैदा हुए और यहीं मरे, लेकिन वसीयत करके मरे कि मरने के बाद लाश करबला ले जाई जाए। उसके पिता सय्यद मुरतुज़ा हुसैन मरे तो ऐसी कोई वसीयत नहीं की। इफ़्फ़न की परदादी नमाज़ी बीबी थीं। वह भी कट्टर परंपरावादी थीं। दादी नमाज़-रोज़े की पाबंद थीं, लेकिन कट्टरवादी नहीं थीं। इस समय उसके घर में उसकी बाजी और अम्मी भी थीं। उसके पिता बनारस के कलेक्टर थे।

इफ़्फ़न की दादी का परिचय–इफ़्फ़न की दादी ज़मींदार की पुत्री थीं। उन्होंने पिता के घर खूब घी-दूध खाया-पीया था। उनका विवाह एक मौलवी से हुआ। इसलिए विवाह के बाद उन्हें विवश होकर परंपरावादी बनना पड़ा। ससुराल में उनकी आत्मा सदा बेचैन रही। मन से वे बहुत उदार थीं। उनका मन

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

हमेशा अपने पीहर जाने के लिए तरसता रहता था। वे अपने बेटे की शादी में गाना-बजाना चाहती थीं, लेकिन मौलवी की पुत्रवधू होने के कारण उन्हें इसकी इज़ाज़त नहीं मिली। इफ़्फ़न के दादा की मृत्यु के बाद उन्होंने इफ़्फ़न की छठी पर खूब जश्न मनाया। इफ़्फ़न अपनी दादी से बहुत प्रेम करता था। दादी उसे तरह-तरह की कहानियाँ सुनाती थीं। परिवार के बाकी सदस्य तो उसे डाँट भी देते थे, लेकिन दादी ने कभी भी उसका दिल नहीं दुःखाया था।

टोपी का इफ़्फ़न की दादी से लगाव–टोपी इफ़्फ़न के घर आता-जाता था। उसे इफ़्फ़न की दादी से बहुत लगाव था। इसका कारण यह था कि दादी और टोपी की भाषा पूर्वी थी। अपने परिवार से उसे प्यार नहीं मिलता था, जबकि इफ़्फ़न की दादी उसे अपने पास बैठाकर उससे बातें करती थीं। दादी से उसे जो अपनापन और प्रेम मिला था, उसके कारण वे दोनों एक अनजाने अटूट रिश्ते में बँध गए थे।

टोपी का परिवार–टोपी के परिवार में उसके पिता डॉक्टर भृगुनारायण शुक्ला नीले तेल वाले, माता रामदुलारी, दादी सुभद्रा देवी, बड़ा भाई मुन्नी बाबू, छोटा भाई भैरव और नौकरानी सीता थी। माता-पिता उसका कोई विशेष ध्यान नहीं रखते थे। दादी हमेशा डाँटती रहती थीं। बड़ा भाई मुन्नी बाबू हमेशा उसकी चुगली लगाता रहता था। इस प्रकार टोपी को अपने परिवार से प्यार नहीं मिला था।

'अम्मी' शब्द पर परिवार में हंगामा–एक दिन भोजन की मेज़ पर बैठे टोपी ने अपनी माँ को 'अम्मी' कह दिया। इस शब्द को सुनते ही घर में भूचाल आ गया। खाना खाते-खाते सबके हाथ रुक गए। दादी सुभद्रा देवी खाना छोड़कर खड़ी हो गई। उन्हें लगा कि हमारी परंपराएँ टूट गई हैं और धर्म भ्रष्ट हो गया है। टोपी की माँ को लगा कि लड़का मुसलमानी प्रभाव में रंग गया है। उसने टोपी को बहुत मारा और कभी-भी इफ़्फ़न के घर न जाने के लिए कहा, लेकिन टोपी ने इफ़्फ़न के घर न जाने की बात नहीं मानी।

इफ़्फ़न की दादी की मृत्यु–अचानक इफ़्फ़न की दादी का निधन हो गया। यह सुनकर टोपी बहुत रोया। वह इफ़्फ़न के घर गया, लेकिन दादी के बिना उसे इफ़्फ़न का घर खाली-सा लगा। वह दादी का नाम तक नहीं जानता था, लेकिन उन दोनों के बीच एक अटूट रिश्ता बन चुका था। दोनों अलग-अलग अधूरे थे। एक ने दूसरे को पूरा कर दिया था। एक बहत्तर बरस की थी और दूसरा आठ साल का। दादी के बिना टोपी का जीवन खाली हो गया था।

इफ़्फ़न के पिता का तबादला–दस अक्टूबर सन् पैंतालीस को इफ़्फ़न के पिता का तबादला मुरादाबाद हो गया। इफ़्फ़न भी अपने पिता के साथ चला गया। इफ़्फ़न की दादी पहले ही मर चुकी थी। टोपी बिलकुल अकेला हो गया। वह उदास रहने लगा। उसने प्रतिज्ञा की कि अब किसी ऐसे लड़के से दोस्ती नहीं करेगा, जिसके पिताजी ऐसी नौकरी करते हों, जिसमें तबादला होता हो।

नए कलेक्टर के बच्चों का दुर्व्यवहार–इफ़्फ़न ने नए कलेक्टर के बच्चों को अपना दोस्त बनाना चाहा। लेकिन उनमें अपने पिता के पद का घमंड था। उन्होंने पहले तो टोपी पर अपनी अंग्रेज़ी का रोब झाड़ा, फिर उसकी बेइज़्ज़ती की और अंत में उसे अपने कुत्ते से कटवा दिया। इसके लिए उसे पेट में सात सुइयाँ लगवानी पड़ीं।

सीता नौकरानी के आँचल की छाया–टोपी अब कुंठित रहने लगा था। वह दादी से भी उलटा-सीधा बोल जाता था। इस कारण उसकी पिटाई होती रहती थी। ऐसे में घर की बूढ़ी नौकरानी सीता उसे अपने पास बुला लेती थी। टोपी उसके आँचल की छाया में अपनेपन की शीतलता महसूस करता था।

नवीं कक्षा में दो बार फ़ेल होना–टोपी नवीं कक्षा में दो बार फ़ेल हो गया। पहले साल इसलिए फ़ेल हुआ: क्योंकि जब भी वह पढ़ने बैठता, घर का कोई-न-कोई सदस्य उसे कुछ काम बता देता। दूसरी बार उसे परीक्षा के समय टाइफ़ाइड बुखार हो गया।

स्कूल में अध्यापकों द्वारा प्रताड़ित–दो साल फ़ेल होने पर टोपी बुद्धू बच्चों की श्रेणी में आ गया। अध्यापक और सहपाठी उसका उपहास करते। अध्यापक उस पर ऐसे व्यंग्य-बाण चलाते कि उसका हृदय टूट जाता और वह लज्जित हो जाता था। अंत में तीसरे साल उसने दसवीं कक्षा तीसरी श्रेणी में पास की।

पाठ के प्रमुख पात्र और उनका परिचय

1. **टोपी शुक्ला**– • असली नाम बलभद्र नारायण शुक्ला • हिंदू ब्राह्मण • अत्यंत भोला-भाला • जाति-धर्म के भेदभाव से रहित • परिवारिक प्रेम से उपेक्षित • इफ़्फ़न के परिवार को प्रेम करने वाला • प्रेम का भूखा।
2. **इफ़्फ़न**– • असली नाम सय्यद जरगाम मुरतुज़ा • मुसलमान • टोपी का पक्का दोस्त • जाति-धर्म के भेदभाव से रहित।
3. **इफ़्फ़न की दादी**– • पारंपरिक मुस्लिम महिला • प्रेमी स्वभाव • टोपी को अपनत्व लुटाने वाली।
4. **सुभद्रा देवी**– • टोपी की दादी माँ • हिंदू कट्टरतावादी • जाति-धर्म के भेदभाव को मानने वाली • कटु व्यवहार • परंपरावादी।
5. **राम दुलारी**– • टोपी शुक्ला की मां • अनपढ़ महिला • परंपरावादी • प्रभावहीन गृहिणी • जाति-धर्म का भेदभाव मानने वाली।
6. **डॉ० भृगु नारायण शुक्ला**– • टोपी के पिता • चालाक • अवसरवादी • नीले तेल के डॉक्टर।
7. **मुरतुज़ा हुसैन**– • इफ़्फ़न के पिता • बनारस के कलेक्टर • धार्मिक कट्टरता से रहित।
8. **मुन्नी बाबू**– • टोपी के बड़े भाई • चुगलखोर • अवसरवादी • टोपी से ईर्ष्या करने वाले।
9. **भैरव**– • टोपी का छोटा भाई • उसने टोपी की कापियों के हवाई जहाज़ बनाकर उड़ाए हैं।
10. **ठाकुर हरिनाम सिंह**– • बनारस के नए कलेक्टर • सय्यद मुरतुज़ा हुसैन की जगह पोस्टिंग।
11. **डब्बू, बीलू, गुड्डू**– • कलेक्टर हरिनाम सिंह के पुत्र • पिता के पद का अहंकार • अंग्रेज़ी बोलने का रौब झाड़ने वाले।
12. **अबदुल वहीद**– • टोपी का सहपाठी • कक्षा का मॉनीटर • लाल तेल वाले डॉक्टर शरफुद्दीन का पुत्र • टोपी की खिल्ली उड़ाने वाला।
13. **सीता**– • टोपी के घर की नौकरानी • सरल एवं ममतामयी • टोपी को अपनत्व देने वाली।

शब्दार्थ

डेवलपमेंट = विकास। **परंपराएँ** = रीति-रिवाज़। **अटूट** = जिसे तोड़ा न जा सके। **मौलवी** = इस्लाम धर्म का आचार्य। **काफ़िर** = गैर मुस्लिम। **वसीयत** = अपनी मृत्यु से पहले ही अपनी संपत्ति या उपभोग की वस्तुओं को लिखित रूप से विभाजित कर देना। **करबला** = इस्लाम का एक पवित्र स्थान। **नमाज़ी** = नियमित रूप से नमाज़ पढ़ने वाला। **सदका** = एक टोटका। **पाबंद** = नियम, वचन आदि का पालन करनेवाला। **छठी** = जन्म के छठे दिन का स्नान/पूजन/उत्सव। **जश्न** = उत्सव/खुशी का जलसा। **नाक-नक्शा** = रूप-रंग। **हाँड़ियाँ** = मिट्टी का छोटा गोलाकार बरतन। **मियाँ** = पति। **कस्टोडियन** = जिस संपत्ति पर किसी का मालिकाना हक न हो उसका संरक्षण करने वाला विभाग। **बीजू पेड़** = गुठली से उगाया गया पेड़। **बेशुमार** = बहुत सारी। **बाज़ी** = बड़ी बहन। **कचहरी** = न्यायालय। **पाक** = पवित्र। **परवरदिगार** = परमेश्वर। **मुलुक** = देश। **घुभलाना** = मुँह में कोई खाद्य पदार्थ रखकर उसे जीभ से बार-बार हिलाकर इधर-उधर करना। **गज़ब** = मुसीबत। **चौका** = चार वस्तुओं का समूह। **बदन** = शरीर। **जुग़राफ़िया** = भूगोल शास्त्र। **अय्यसा** = ऐसा। **तोहरी** = तुम्हारी। **सकत्यो** = सकता। **फिकर** = चिंता। **सन्नाटा** = शांति। **पुरसा** = सांत्वना देना। **आत्म-इतिहास** = अपने जीवन का इतिहास। **तबादला** = बदली, स्थानांतरण। **क्लम्ज़ी** = भद्दा। **लप्पड़** = थप्पड़। **भुकीं** = चुभीं। **रुख** = चेहरा। **बाज** = बराबरी। **गाउदी** = मूर्ख, मंदबुद्धि। **सितम** = ज़ुल्म। **मिसाल** = उदाहरण। **गीली मिट्टी का लौंदा** = गीली मिट्टी का पिंड। **बरस** = साल। **पारसाल** = आने वाला साल। **तमाम** = सभी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–

प्रश्न 1 : टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात क्यों कही?

उत्तर : इफ़्फ़न की दादी टोपी को बहुत प्यार करती थीं। वह टोपी को अपने पास बैठाकर उससे बातें करती थीं और कहानियाँ भी सुनाती थीं। उनका व्यवहार बहुत स्नेहपूर्ण था। दूसरी ओर टोपी की दादी का व्यवहार बहुत रूखा था। वह उसे डाँटती रहती थीं। इसीलिए टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात कही।

प्रश्न 2 : 'अम्मी' शब्द पर टोपी के घर वालों की क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर : मुसलमान लोग माँ को 'अम्मी' कहते हैं। जब टोपी शुक्ला ने अपनी माँ को 'अम्मी' कहा तो घर वालों के होश उड़ गए। वे कट्टर हिंदू थे। उन्हें अपने परिवार की परंपराएँ टूटती हुई दिखाई दीं। धर्म भ्रष्ट होता दिखाई दिया। उन्हें लगा कि यह बच्चा मुसलमानों के प्रभाव में आ गया है। घर में भूचाल आ गया। दादी खाना छोड़कर चली गईं। माँ ने टोपी को बहुत मारा। लेकिन अवसरवादी पिता को जब पता चला कि टोपी की दोस्ती कलेक्टर के लड़के से है तो तीसरे ही दिन जाकर शक्कर और कपड़े का परमिट ले आए।

प्रश्न 3 : इफ़्फ़न की दादी का मायके का घर कस्टोडियन में क्यों चला गया?

उत्तर : जिस संपत्ति का मालिकाना हक नहीं रह जाता, वह कस्टोडियन की हो जाती है। इफ़्फ़न की दादी के मायके वाले भारत-विभाजन के समय पाकिस्तान चले गए थे: इसलिए उनका घर कस्टोडियन में चला गया।

प्रश्न 4 : ठाकुर हरिनाम सिंह के तीनों लड़कों को एहसास था कि वे कलेक्टर के बेटे हैं। लेखक द्वारा ऐसा कहा जाना ठाकुर हरिनाम सिंह के तीनों बेटों और टोपी के विषय में किस विचारधारा को स्पष्ट करता है? *(CBSE SQP 2023-24)*

उत्तर : 'ठाकुर हरिनाम सिंह के तीनों लड़कों को एहसास था कि वे कलेक्टर के बेटे हैं।' लेखक के इस कथन से पता चलता है कि वे तीनों लड़के घमंडी थे। उन्हें अपने पिता के कलेक्टर होने का एहसास था। वे अंग्रेजी बोलते थे। दूसरी ओर टोपी भावुक और सरल हृदय था। वह यह समझकर कलेक्टर के बँगले पर गया था कि ठाकुर हरिनाम सिंह के बेटे भी इफ़्फ़न की तरह उसके दोस्त बन जाएँगे, लेकिन उन्होंने टोपी के साथ दुर्व्यवहार किया और उस पर अपना पालतू कुत्ता छोड़ दिया।

प्रश्न 5 : इफ़्फ़न की दादी अपने पीहर क्यों जाना चाहती थीं?

उत्तर : इफ़्फ़न की दादी एक ज़मींदार की पुत्री थीं। उन्होंने अपने पिता के घर खूब घी-दूध-दही और फल खाए थे। बाग-बगीचों में विहार किया था। उनका विवाह एक मौलवी से हुआ था। मौलवी परंपरावादी होते हैं: अतः ससुराल में उन्हें बहुत बंधन में रहना पड़ा था। उन्हें अपने पिता के घर का वह स्वच्छंद जीवन, कच्ची हवेली और बाग-बगीचे बहुत याद आते थे। इसलिए वह अपने पीहर जाना चाहती थीं।

प्रश्न 6 : इफ़्फ़न की दादी अपने बेटे की शादी में गाने-बजाने की इच्छा पूरी क्यों नहीं कर पाईं? *(CBSE 2016)*

उत्तर : इफ़्फ़न की दादी का विवाह एक मौलवी के साथ हुआ था। मौलवी बहुत परंपरावादी होते हैं। उनके घर में स्त्रियों का नाचना-गाना उचित नहीं माना जाता। इसीलिए इफ़्फ़न की दादी अपने बेटे की शादी में अपनी गाने-बजाने की इच्छा पूरी नहीं कर पाईं।

प्रश्न 7 : टोपी शुक्ला अपनी दादी को नापसंद क्यों करता था? पाठ के आधार पर लिखिए। *(CBSE 2023)*

उत्तर : टोपी शुक्ला की दादी का नाम सुभद्रा देवी था। वह हिंदू कट्टरवादी महिला थी। उसके मन में जाति-धर्म का भेदभाव कूट-कूटकर भरा था। उसे टोपी का किसी मुसलमान बच्चे से मिलना पसंद नहीं था। टोपी के प्रति उसका व्यवहार बहुत कटु था। जब टोपी ने अपनी माँ को अम्मी कहा था तो दादी ने आसमान सिर पर उठा लिया था और खाना छोड़कर चली गई थी। इस कारण टोपी की माँ रामदुलारी ने उसकी पिटाई भी की थी। जब टोपी तीसरे बरस कक्षा में पास हुआ दादी ने खुशी प्रकट नहीं की, बल्कि यह कहकर उपहास किया कि "भगवान नज़रे बद से बचाए। रफ़्तार अच्छी है। तीसरे बरस तीसरे दर्जे में पास तो हो गए।" इन सब बातों के कारण टोपी अपनी दादी को नापसंद करता था।

प्रश्न 8 : इफ़्फ़न, टोपी शुक्ला की कहानी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा किस तरह से है?

उत्तर : इस कहानी का उद्देश्य यह बताना है कि बच्चे को जिससे प्रेम और अपनापन मिलता है, वह उसी को अपना मित्र बना लेता है। उसकी धर्म-जाति चाहे कुछ भी हो, इसका बच्चे पर कोई फ़र्क नहीं पड़ता। टोपी को इफ़्फ़न से अपनापन मिला तो उसने उसे अपना मित्र बना लिया, जबकि इफ़्फ़न का धर्म और जाति अलग हैं। टोपी हिंदू है और इफ़्फ़न मुसलमान। इफ़्फ़न और उसकी दादी से टोपी का प्रेम का अटूट रिश्ता है। वह इनके बिना स्वयं को अकेला और अधूरा पाता है। इफ़्फ़न के बिना टोपी की कहानी पूरी नहीं हो सकती, इसलिए वह टोपी शुक्ला कहानी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। लेखक इस कहानी के माध्यम से जो संदेश देना चाहता है, वह भी इफ़्फ़न के बिना संभव नहीं है। इफ़्फ़न के कहानी में आने से ही इस कहानी का मूल उद्देश्य पूरा होता है। इसलिए भी इफ़्फ़न कहानी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

प्रश्न 9 : पूरे घर में इफ़्फ़न को अपनी दादी से ही विशेष स्नेह क्यों था?

उत्तर : वैसे तो इफ़्फ़न को अपने परिवार के सभी सदस्यों से प्रेम था, लेकिन दादी माँ से उसे विशेष प्रेम था। इसका कारण यह था कि उसकी अम्मी, बाजी और अब्बू कभी-न-कभी उसे डाँट देते थे, लेकिन दादी ने उसका दिल कभी नहीं दुःखाया। वह रात को उसे बहराम डाकू, अनार परी, बारह बुर्ज, अमीर हमज़ा, गुलबकावली, हातिमताई और पंच फुल्ला रानी की कहानियाँ सुनाया करती थीं।

प्रश्न 10 : टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मज़हब और जाति के थे, पर एक अनजान अटूट रिश्ते में बँधे थे। इस कथन के आलोक में अपने विचार लिखिए।

उत्तर : बच्चे और एक निश्छल वृद्ध का स्वभाव कुछ-कुछ एक जैसा होता है। इन्हें जिससे प्यार और अपनापन प्राप्त होता है, ये उसी की ओर आकर्षित हो जाते हैं, फिर उसका धर्म या जाति चाहे कुछ भी हो। टोपी और इफ़्फ़न की दादी दोनों अलग-अलग धर्म और जाति के थे, लेकिन दोनों को एक-दूसरे से प्रेम और अपनत्व प्राप्त होता था। इसीलिए दोनों एक अटूट रिश्ते में बँधे थे।

प्रश्न 11 : 'टोपी शुक्ला' पाठ के माध्यम से लेखक ने मानवीय संबंधों की कौन-सी सच्चाई उजागर की है?

उत्तर : 'टोपी शुक्ला' पाठ के माध्यम से लेखक ने मानवीय संबंधों की इस सच्चाई को उजागर किया है कि इन संबंधों का आधार प्रेम और अपनत्व की भावना है। ये संबंध भाषा, धर्म, जाति और उम्र के बंधन से परे होते हैं। टोपी हिंदू ब्राह्मण है और इफ़्फ़न मुसलमान

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

है, लेकिन जब दोनों को एक-दूसरे से प्रेम और अपनापन मिला तो वे मित्रता के बंधन में बँध गए। इसी प्रकार टोपी एक बच्चा है और इफ़्फ़न की दादी बुढ़िया हैं। दोनों की उम्र में बहुत अंतर है, लेकिन दोनों एक अटूट आत्मीय संबंध में बँधे हैं। इससे पता चलता है कि मनुष्य को जिससे प्रेम और अपनत्व मिलता है, वह उसी को अपना मानता है, फिर उसका धर्म या जाति चाहे जो भी हो।

प्रश्न 12 : सच्चा मित्र जीवन की अनुपम निधि होता है। टोपी शुक्ला और इफ़्फ़न का उदाहरण देते हुए अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर : कोई भी निधि मनुष्य के सुख का आधार होती है और उसके सुख-दुःख में काम आती है। इसी प्रकार सच्चा मित्र भी जीवन की अनुपम निधि होता है। वह सुख-दुःख में काम आता है। सच्चे मित्र की एक और विशेषता होती हैं कि वह हमारी छिपाने योग्य बातों को छिपाता है, अच्छी बातों का प्रचार-प्रसार करता है। विपत्ति के समय सही परामर्श देकर हमारा मार्गदर्शन भी करता है, इसीलिए मित्र के बिना व्यक्ति का जीवन सूना हो जाता है। सच्ची मित्रता में धर्म, जाति, भाषा आदि की कोई बाधा नहीं होती। टोपी और इफ़्फ़न सच्चे मित्र थे, जबकि उनकी जाति और धर्म अलग थे। जब इफ़्फ़न के पिता का तबादला हो गया और वह शहर छोड़कर दूसरी जगह चला गया तो टोपी अपने आपको बिलकुल अकेला महसूस करने लगा। वह गहरी वेदना से भरकर यह प्रतिज्ञा करता है कि वह अब ऐसे लड़के से दोस्ती नहीं करेगा, जिसके पिताजी ऐसी नौकरी करते हों, जिसमें तबादला हो जाता है। यह भावना बताती है कि मित्र का जीवन में कितना महत्त्व है और उसके बिना जीवन किस प्रकार सूना हो जाता है।

प्रश्न 13 : 'टोपी शुक्ला' कहानी के आधार पर लिखिए कि कहानी का प्रमुख पात्र टोपी अपने बड़े भाई मुन्नी बाबू से क्यों चिढ़ता था। टोपी के साथ मुन्नी बाबू द्वारा किए गए व्यवहार को आप कितना उचित मानते हैं? तर्कसहित उत्तर दीजिए। *(CBSE 2023)*

उत्तर : मुन्नी बाबू टोपी का बड़ा भाई था। वह बहुत चुगलखोर, अवसरवादी और झूठा था। वह टोपी को तंग करता रहता था। माँ को अम्मी कहने पर जब टोपी की पिटाई हो रही थी तो मुन्नी बाबू ने इस अवसर का फायदा उठाया और टोपी की चुगली लगाई कि उसने टोपी को कबाब खाते हुए देखा है। वास्तविकता यह थी कि टोपी ने मुन्नी बाबू को कबाब खाते देखा था। मुन्नी बाबू अपने बड़े होने का दुरुपयोग करता था और टोपी को हर समय परेशान करता रहता था। यही कारण था कि टोपी मुन्नी बाबू से चिढ़ता था। हमारे विचार से एक बड़े भाई का छोटे भाई के साथ ऐसा व्यवहार उचित नहीं है। इससे छोटे भाई के मन में बड़े के प्रति आदर का भाव समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 14 : एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने से टोपी को किन भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा होगा? उसकी भावनात्मक परेशानियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा-व्यवस्था में आपके विचार से क्या परिवर्तन होने चाहिए? तर्कसहित उत्तर दीजिए। *(CBSE 2015)*

उत्तर : टोपी नवीं कक्षा में दो बार फ़ेल हो गया, जिसके कारण उसे एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठना पड़ा। इससे उसे निम्नलिखित परेशानियों का सामना करना पड़ा–

(i) एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठते हुए उसे लज्जा का अनुभव होता था।

(ii) नवीं में उसके साथ पढ़ने वाले उसके साथी अगली कक्षा में चले गए थे।

(iii) अपने से पिछली कक्षा के बच्चों के साथ बैठते हुए उसे हीनता महसूस होती थी।

(iv) कक्षा में उसका कोई साथी नहीं था; अतः उसे एकाकीपन का शिकार होना पड़ा।

(v) जब अध्यापक बुद्धू छात्र के रूप में उसका उदाहरण देते थे तो उसे अन्य छात्रों के उपहास का पात्र बनना पड़ता था।

(vi) जब वह प्रश्न का उत्तर देना चाहता था तो अंग्रेज़ी अध्यापक ने उसे यह कहकर बैठा दिया था कि तुम अगले साल उत्तर दे देना। इससे उसे कक्षा में लज्जित होना पड़ा।

परिवार से प्रताड़ित और उपेक्षित टोपी जब एक कक्षा में दो बार फेल हो गया, तब वह स्वयं को भावनात्मक रूप से असुरक्षित महसूस करने लगा। इस दृष्टिकोण से आज की शिक्षा व्यवस्था में विशेष बदलाव की आवश्यकता है। सर्वप्रथम छात्रों के संवेगात्मक लगाव के विकास की ओर ध्यान देना चाहिए। शिक्षण-पद्धति का उद्देश्य सिर्फ़ परीक्षा पास करना ही नहीं होना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय में मनोवैज्ञानिकों की नियुक्ति होनी चाहिए, जिससे वे छोटी उम्र के बच्चों की समस्याओं का निदान कर सकें। लिखित परीक्षा के आधार पर ही नहीं, बल्कि संपूर्ण व्यक्तित्व के आधार पर विद्यार्थी का आकलन किया जाए। अध्यापकों को सभी विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए। पढ़ाई में कमज़ोर छात्रों का मज़ाक उड़ाने की अपेक्षा उनका मनोबल बढ़ाना चाहिए। अध्यापकों को चाहिए कि वे नए आए छात्रों को फ़ेल हुए छात्रों के अनुभव का लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। फ़ेल हुए छात्रों की कमज़ोरियों पर उन्हें विशेष ध्यान भी देना चाहिए।

प्रश्न 15 : टोपी सरल स्वभाव का था, फिर भी उसकी दोस्ती नए कलेक्टर के लड़कों से नहीं हो सकी। क्यों? स्पष्ट कीजिए। *(CBSE 2016)*

उत्तर : टोपी बहुत सरल, भोला और संकोची स्वभाव का था। इस कारण उसकी दोस्ती अधिक बच्चों से नहीं हो सकी। एक मात्र इफ़्फ़न ही उसका दोस्त था। उसके चले जाने से टोपी बहुत उदास हो गया था। घर-परिवार में भी उसे किसी का प्यार नहीं मिलता था। स्कूल में भी उसका कोई साथी नहीं था। वह सोचता था कि नए कलेक्टर के बच्चे भी इफ़्फ़न जैसे होंगे, इसलिए वह उनसे दोस्ती करने के लिए गया। लेकिन नए कलेक्टर के तीनों लड़कों में अपने पिता के पद का घमंड था। उन्होंने टोपी पर अंग्रेज़ी का रोब झाड़ा। उसकी बेइज़्ज़ती की और उसे अपने कुत्ते से कटवा दिया। इस कारण टोपी की दोस्ती उन लड़कों से नहीं हो सकी।

प्रश्न 16 : पढ़ाई में तेज़ होने पर भी कक्षा में दो बार फ़ेल हो जाने पर टोपी के साथ घर पर या विद्यालय में जो व्यवहार हुआ, उस पर मानवीय-मूल्यों की दृष्टि से टिप्पणी कीजिए। *(CBSE 2017)*

उत्तर : टोपी पढ़ाई में तेज़ था, फिर भी कक्षा में दो बार फ़ेल हो गया। कक्षा में फ़ेल हो जाने पर उसके साथ घर से लेकर कक्षा तक बड़ा अमानवीय व्यवहार किया गया। कक्षा में उसके सहपाठियों ने उससे किनारा कर लिया। वे बात-बात पर उसकी बुद्धिमत्ता पर व्यंग्य करते। हर समय उसे यही अहसास कराते कि वह उनके साथ बैठने, खेलने-कूदने, पढ़ने और यहाँ तक कि मित्रता करने के भी योग्य नहीं है; क्योंकि वह उन सबसे मूर्ख है। अध्यापकगण भी उसकी न केवल उपेक्षा करते, बल्कि उसके तीसरी बार भी फ़ेल होने की भविष्यवाणी करके उसकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ करते। अध्यापक और सहपाठी तो पराए थे, दादी तो उसकी अपनी थीं, किंतु उन्होंने भी तीसरी बार परीक्षा में पास होने पर कोई खुशी ज़ाहिर नहीं की, बल्कि यह कहकर, उसके मन को ठेस ही पहुँचाई– "भगवान नज़रे-बद से बचाए। रफ़्तार अच्छी है। तीसरे बरस तीसरे दर्जे में पास तो हो गए.....।" अब भला टोपी उन्हें कैसे समझाए कि दो बार फ़ेल होने के लिए

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

वह अकेला ज़िम्मेदार नहीं है। उसके लिए घर का प्रत्येक सदस्य ज़िम्मेदार है, जिन्होंने उसको मानसिक रूप से प्रताड़ित किया। एक अबोध बच्चे के साथ ऐसा अमानवीय व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए था। इफ़्फ़न से दोस्ती करना कोई अपराध तो न था। यदि सबकी नज़र में उसका वह कार्य अपराध था तो सभी को मिलकर उसके साथ वैसा प्रेमपूर्व व्यवहार करना चाहिए था, जिसको पाने के लिए उसने इफ़्फ़न से दोस्ती की। बच्चे मन के सच्चे होते हैं, उनके मन में ऊँच-नीच, जात-पाँत का कोई भेद नहीं होता, वे सिर्फ़ प्यार की भाषा और प्यार की ही जाति जानते हैं। इस आधार पर उनकी भावनाओं को आहत करके उन्हें मानसिक पीड़ा पहुँचाना किसी के लिए भी उचित नहीं है।

प्रश्न 17 : 'टोपी शुक्ला' की कहानी से उभरने वाले किन्हीं तीन महत्त्वपूर्ण जीवन-मूल्यों की सोदाहरण समीक्षा कीजिए। ***(CBSE 2017)***

उत्तर : 'टोपी शुक्ला' की कहानी से निम्नलिखित तीन महत्त्वपूर्ण जीवन-मूल्य उभरकर आते हैं—

(i) **जाति-धर्म के नाम पर ईश्वर को बाँटना अनुचित**—जाति-धर्म या भाषा के आधार पर ईश्वर को बाँटना उचित नहीं है। उसे चाहे कृष्ण के नाम पर हम अवतार कहें या मुहम्मद के नाम पर पैगंबर, उससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। दोनों वास्तव में एक ही हैं। दोनों एक ही शक्ति के दो अलग-अलग नाम हैं। इन नामों के चक्कर में लोग यह भूल जाते हैं कि कृष्ण और मुहम्मद दोनों ही दूध देने वाले जानवर चराया करते थे। अतः ईश्वर को अलग-अलग नामों और अलग-अलग जाति-धर्म के नाम पर बाँटकर विवाद पैदा करना गलत है।

(ii) **सभी व्यक्ति एकसमान हैं**—जिस प्रकार कृष्ण और मुहम्मद में कोई फ़र्क नहीं है, उसी प्रकार इफ़्फ़न और टोपी में कोई फ़र्क नहीं है। सभी व्यक्ति एकसमान हैं, फिर चाहे उनके नाम कुछ भी हों। जब दोनों को एक ही ईश्वर ने बनाया है तो उनको नाम के आधार पर बाँटकर उनमें भेदभाव करना किसी भी प्रकार से उचित नहीं है। इसीलिए हिंदू-मुसलमान भाई-भाई हैं, यह भी कहने की ज़रूरत नहीं है; क्योंकि रिश्ते या संबंध कहने से नहीं बनते, मानने से बनते हैं। जब दो भाई-भाई आपस में यह नहीं कहते कि हम दोनों भाई-भाई हैं तो फिर यह कहने की क्या आवश्यकता है कि हिंदू-मुसलमान भाई-भाई हैं। वे भाई-भाई हैं तो हैं, इसे कहने की क्या ज़रूरत है।

(iii) **प्रेम के द्वारा ही किसी को अपना बनाया जा सकता है**—संसार में प्रेम ही ऐसी भावना है, जिसके द्वारा किसी को भी अपना बनाया जा सकता है। वह इफ़्फ़न और उसकी दादी का प्रेम ही है, जो टोपी स्वयं को उसके बिना अधूरा मानता है। उसके स्वयं के भाई, माँ और दादी उसे हर समय दुत्कारते हैं, इसलिए उनके लिए टोपी के मन में कोई स्थान नहीं। अपनी दादी से तो टोपी उसके रूखे व्यवहार के कारण नफ़रत करता है। इसीलिए वह अपने मन में सोचता है कि इफ़्फ़न की दादी के बजाय उसकी दादी को मरना चाहिए था।

प्रश्न 18 : सीता की छाया में जाने से टोपी की आत्मा भी छोटी हो गई। कैसे? जीवन-मूल्यों के संदर्भ में उत्तर दीजिए।

उत्तर : टोपी को अपने परिवार से प्रेम नहीं मिला। प्रेम की भूख को शांत करने के लिए पहले उसने इफ़्फ़न से दोस्ती की, फिर वह उसकी दादी के आँचल की छाया में गया। वहाँ से उसे खूब अपनापन और प्रेम मिला। लेकिन दादी का देहांत हो गया और इफ़्फ़न अपने पिता के साथ दूसरे शहर में चला गया। नए कलेक्टर के लड़कों ने भी उससे दोस्ती नहीं की। अंत में वह अपने घर की नौकरानी सीता की छाया में गया, जो उसे बहुत प्रेम करती थी। बच्चा जैसी संगति में रहता है, वैसे ही संस्कार ग्रहण कर लेता है। सीता नौकरानी थी, सब उसे डाँटते रहते थे। उसका अपना कोई स्वाभिमान नहीं था। वह किसी का प्रतिकार भी नहीं कर सकती थी। उसकी छत्रच्छाया में रहकर टोपी की आत्मा ने भी इन्हीं संस्कारों को ग्रहण कर लिया था। घर के छोटे-बड़े सभी उसे डाँट लेते थे। वह किसी का प्रतिकार नहीं करता था। सब उसे नौकरों की तरह काम बताते रहते थे। इस प्रकार सीता की छत्रच्छाया में रहकर उसकी आत्मा छोटी हो गई थी।

प्रश्न 19 : 'मित्रता और आत्मीयता जाति व भाषा के बंधनों से परे होते हैं।' 'टोपी शुक्ला' पाठ के आधार पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर : मित्रता और आत्मीयता जाति व भाषा के बंधनों से परे होते हैं, यह बात टोपी शुक्ला और इफ़्फ़न की मित्रता से भली-भाँति स्पष्ट हो जाती है। इफ़्फ़न और टोपी दोनों की जाति और भाषा दोनों ही अलग थीं, किंतु दोनों की मित्रता और आत्मीयता अद्भुत थी। दोनों एक-दूसरे के पूरक थे, बल्कि दो जिस्म और एक जान थे। यदि जाति व भाषा मित्रता और आत्मीयता में बंधन होती तो टोपी की अपनी माँ और दादी उसकी सबसे अच्छी मित्र होतीं, मगर टोपी के लिए तो इफ़्फ़न की दादी दुनिया की सबसे अच्छी दादी हैं, तभी तो वह अपनी दादी को बदलना चाहता है। वह चाहता था कि इफ़्फ़न की दादी के बजाय उसकी दादी मर जाती तो कितना अच्छा होता। इफ़्फ़न और उसकी दादी से उसे निश्छल प्रेम और आत्मीयता मिलती है, तभी तो वह केवल उन्हीं का हो जाना चाहता है और इफ़्फ़न के पिता का तबादला होने पर वह प्रतिज्ञा करता है कि वह किसी ऐसे बच्चे से दोस्ती नहीं करेगा, जिसका बाप ऐसी नौकरी करता हो, जिसमें बदली होती रहती है। नए कलेक्टर के बच्चे तो टोपी की जाति के थे और उसकी भाषा के साथ-साथ अंग्रेज़ी बोलते थे, किंतु उन्होंने टोपी से दोस्ती न करके उसके साथ दुश्मनों जैसा अमानवीय व्यवहार किया। उन्होंने न केवल टोपी को मारा, बल्कि अपने अलसेशियन कुत्ते से कटवाया भी। स्पष्ट है कि मित्रता और आत्मीयता जाति व भाषा के बंधनों से परे होते हैं।

प्रश्न 20 : इफ़्फ़न और टोपी शुक्ला की दोस्ती आज के समाज के लिए वरदान है। तर्कसहित सिद्ध कीजिए।

अथवा **इफ़्फ़न और टोपी शुक्ला की मित्रता भारतीय समाज के लिए किस प्रकार प्रेरक है? जीवन-मूल्यों की दृष्टि से लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिए।** ***(CBSE 2018)***

उत्तर : इफ़्फ़न और टोपी की दोस्ती आज के समाज के लिए एक वरदान है। यह बात सत्य है। हमारे भारतीय समाज की सबसे अधिक हानि सांप्रदायिकता और कट्टरवाद से हुई है। इसी के कारण देश के टुकड़े भी हुए। यह समस्या आज भी बनी हुई है। लोग धर्म और भाषा के नाम पर एक-दूसरे का खून बहाते हैं। इस समस्या का समाधान पाठ में दिखाई टोपी और इफ़्फ़न की दोस्ती ही है। यदि हमारे देश के हिंदू और मुसलमानों की भावनाएँ टोपी और इफ़्फ़न जैसी हो जाएँ तो देश में सांप्रदायिक सौहार्द की भावना बढ़ेगी, कट्टरता समाप्त होगी तथा देश की एकता और अखंडता को मजबूती मिलेगी। यह मानव स्वभाव की सच्चाई है कि उसे जिससे प्रेम और अपनापन मिलता है, वह उसी का हो जाता है। फिर वह जाति और धर्म नहीं देखता; अतः यदि देश के हिंदू-मुसलमानों में टोपी-इफ़्फ़न जैसी दोस्ती हो जाए तो यह समाज के लिए एक वरदान है।

प्रश्न 21 : नाम के चक्कर में पड़कर लोग क्या भूल गए हैं? टोपी ने ऐसा क्या कह दिया कि रामदुलारी की आत्मा गनगना उठी?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उत्तर : नाम के चक्कर में पड़कर लोग इस सत्य को भूल गए हैं कि ईश्वर एक है। उसके बनाए मनुष्य भी समान हैं। लोगों ने ईश्वर को नामों के द्वारा बाँट लिया है। वे भूल गए हैं कि कृष्ण को हम अवतार कहते हैं और मुहम्मद साहब को पैगंबर। दोनों दूध देने वाले पशुओं को चराया करते थे। हम हिंदी और उर्दू के लिए भी लड़ते हैं, लेकिन भूल गए हैं कि ये एक ही भाषा हिंदवी के दो नाम हैं। नाम के आधार पर मानवता का बँटवारा ठीक नहीं है। मुसलमान माँ को 'अम्मी' कहते हैं और हिंदू 'माँ'। टोपी ने अपनी माँ को 'अम्मी' कह दिया। इस नाम बदलने से उसके घर में ऐसा भूचाल आया कि दादी सुभद्रा देवी खाना छोड़कर चली गईं। उसकी माँ रामदुलारी की आत्मा इस शब्द को सुनकर इतनी आहत हुई कि उसने टोपी की बहुत पिटाई की। उन्हें लगा कि इस शब्द के प्रयोग से उनके घर की परंपराएँ टूट गई हैं और धर्म भ्रष्ट हो गया है।

प्रश्न 22 : 'टोपी शुक्ला' पाठ में टोपी और इफ़्फ़न किस-किसका प्रतिनिधित्व करते हैं? इन दोनों चरित्रों के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर : 'टोपी शुक्ला' पाठ में टोपी और इफ़्फ़न क्रमशः हिंदू और मुसलमान कौम का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन दोनों चरित्रों के माध्यम से लेखक यह संदेश देना चाहता है कि सब धर्मों के लोग एक ही ईश्वर की रचना हैं। उनमें केवल नाम का भेद है, अन्यथा सब एक ही हैं। लेखक बताना चाहता है कि धर्म, जाति, भाषा और परंपराएँ अलग होने पर भी देश के हिंदू और मुसलमान सौहार्द भाव से रह सकते हैं। पाठ में टोपी हिंदू है और इफ़्फ़न मुसलमान है। दोनों के परिवार धार्मिक कट्टरवादी हैं, लेकिन फिर भी इन दोनों में गहरी मित्रता है। वे कहानी में भी एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। लेखक संदेश देना चाहता है कि यदि इसी प्रकार कट्टरवाद को छोड़कर दोनों कौमों के लोग एक-दूसरे के साथ भाईचारे का संबंध जोड़ लें, तो देश में मज़हब के नाम पर इंसानियत का खून बहना रोका जा सकता है।

प्रश्न 23 : समाज में समरसता बनाए रखने के लिए टोपी और इफ़्फ़न जैसे पात्रों का होना आवश्यक है–तीन तर्क देकर पुष्टि कीजिए। *(CBSE 2020)*

उत्तर : समाज में समरसता बनाए रखने के लिए टोपी और इफ़्फ़न जैसे पात्रों का होना आवश्यक है। इसके लिए हम पहला तर्क यह दे सकते हैं कि सामाजिक समरसता के लिए धार्मिक सद्भाव आवश्यक है। टोपी और इफ़्फ़न इसके उदाहरण हैं। टोपी हिंदू है इफ़्फ़न मुसलमान, फिर भी दोनों घनिष्ठ मित्र हैं। उनके अलग-अलग धर्म मित्रता में बाधक नहीं हैं। दूसरा तर्क यह है कि आर्थिक असमानता होते हुए भी सामाजिक समरसता बनाई जा सकती है। टोपी और इफ़्फ़न यही सिद्ध करते हैं। इफ़्फ़न के पिता कलेक्टर हैं और टोपी के पिता एक छोटे-से व्यापारी हैं। दोनों की आर्थिक स्थिति में बहुत अंतर है, लेकिन फिर भी दोनों पक्के मित्र हैं। तीसरा तर्क यह दिया जा सकता है कि पारिवारिक विचारधारा भी सामाजिक समरसता में बाधक नहीं है। उपर्युक्त दोनों पात्र इस बात को भी सिद्ध करते हैं। टोपी का परिवार कट्टरवादी है और इफ़्फ़न का उदारवादी है, फिर भी दोनों में मित्रता है। इन सब बातों से सिद्ध होता है कि समाज में समरसता बनाए रखने के लिए टोपी और इफ़्फ़न जैसा बनना आवश्यक है।

प्रश्न 24 : आपके विचार से मित्रता की कौन-कौन-सी कसौटियाँ हो सकती हैं? 'टोपी शुक्ला' पाठ के संदर्भ में तीन बिंदु लिखिए। *(CBSE 2022 Term-2)*

उत्तर : हमारे विचार से मित्रता की अनेक कसौटियाँ हो सकती हैं: जैसे–जाति, धर्म, आयु, आर्थिक स्थिति, आपदा, स्वभाव आदि। 'टोपी शुक्ला' पाठ के संदर्भ में मित्रता की कसौटी के तीन बिंदु निम्नलिखित हैं–

1. **जाति-धर्म**—सच्ची मित्रता में जाति या धर्म की बाधा नहीं होती। टोपी हिंदू था और इफ़्फ़न मुसलमान, लेकिन धर्म की असमानता उनकी मित्रता में बाधक नहीं बन सकी।
2. **आर्थिक स्थिति**–आर्थिक स्थिति भी अच्छी मित्रता में बाधक नहीं बन सकती। टोपी के पिता एक सामान्य व्यापारी थे और इफ़्फ़न के पिता जिलाधिकारी थे, लेकिन यह आर्थिक असमानता उन दोनों की मित्रता में बाधक नहीं बन सकी।
3. **आयु**—आयु की असमानता भी मित्रता में बाधक नहीं होती। 'टोपी शुक्ला' पाठ में टोपी और इफ़्फ़न की दादी में गहरी मित्रता और लगाव था, जबकि दोनों की आयु में बहुत असमानता थी। टोपी एक बच्चा था और इफ़्फ़न की दादी बुढ़िया। आयु की असमानता इन दोनों के स्नेह और मित्रता में बाधक नहीं बन सकी।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

1. समाज में रिश्तों की क्या अहमियत है? इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
2. ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं, उससे उनकी किस मनोवृत्ति का पता चलता है?
3. पंद्रह बीघे ज़मीन के लालच ने किस तरह लोगों के आपसी सद्भाव को बिगाड़ दिया था? हरिहर काका पाठ के आधार पर संक्षेप में लिखिए। यह घटना आपके मन पर क्या प्रभाव डालती है?
4. पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पी०टी० सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
5. मास्टर प्रीतमचंद को स्कूल से निलंबित क्यों कर दिया गया? निलंबन के औचित्य और उस घटना से उभरने वाले जीवन-मूल्यों पर अपने विचार लिखिए।
6. बच्चे मन के सच्चे होते हैं। भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र आदि का भेदभाव उनके परस्पर मेल या खेल में बाधक नहीं हो सकता। पाठ के आधार पर तर्कसहित उत्तर दीजिए।
7. सच्चा मित्र जीवन की अनुपम निधि होता है। टोपी शुक्ला और इफ़्फ़न का उदाहरण देते हुए अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
8. 'टोपी शुक्ला' पाठ के माध्यम से लेखक ने मानवीय संबंधों की कौन-सी सच्चाई उजागर की है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in